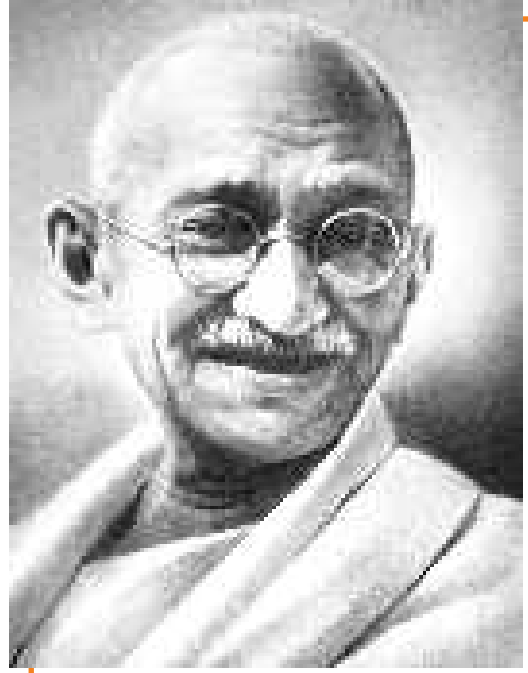


Chirping Sparrow

Year - 5, Issue-II, January to March 2009

जिस जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस उस राही को धन्यवाद ।
जीवन अस्थिर अनजाने ही
हो जाता पथ पर मेल कहीं
सीमित पग-पग लम्बी मंजिल
तय कर लेना कुछ खेल नहीं
दाएँ-बाएँ सुख-दुख चलते
सम्मुख चलता पथ का प्रमाद
साँसों पर अवलिम्बत काया
जब चलते -चलते चूर हुई
दो स्नेह शब्द मिल गए ,
मिली नव स्फूर्ति, थकावट दूर हुई ।
पथ के पहचाने छूट गए
पर साथ-साथ चल रही याद
जो साथ न मेरा दे पाए
उनसे कब सूनी हुई डगर
इस पथ पर वे ही चलते हैं
जो चलने का पा गए स्वाद
जिस जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस उस राही का धन्यवाद ।

-शिवमंगल सिंह सुमन



30 जनवरी-अहिंसा दिवस
पुण्यतिथि- महात्मा गाँधी

Pride of Society

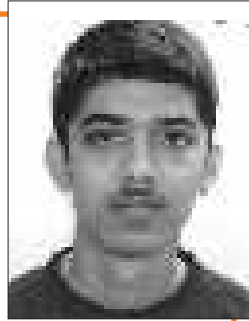
यशपाल जैन



यशपाल जी (जन्म—1912, मृत्यु 1988 वर्ष की उम्र में) जाने माने लेखक थे। वे जैनदर्शन एवं गाँधी जी की अहिंसक विचारधारा के समर्थक थे। उन्होंने कई किताबें लिखी हैं, जिनमें “मोर की आहट”, “राजकुमार की प्रतिज्ञा”, “कलश”, “चट्टान नहीं पिघलती”, “अमृतघट”, “सेतू निर्माता”, “रूस में छयालिस दिन” प्रमुख हैं। आपने महात्मा गाँधी जी पर विशेष साहित्य एवं छोटी-छोटी कहानियाँ सृजित की। भारत सरकार और राज्य सरकारों द्वारा आपके कार्यों को कई पुरस्कारों से नवाजा गया, जैसे साहित्य भूषण (उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान), साहित्य वाचस्पति, अणुव्रत पुरस्कार, सुलभ साहित्य अकादमी पुरस्कार आदि। “रूस में छयालिस दिन” और “द ब्रिज बिल्डर” पुस्तकों के लिये आपको दो बार “सोवियत नेहरू पुरस्कार” से सम्मानित किया गया। यशपाल जी ने हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना की। समाज का अहिंसा द्वारा उत्थान पर केन्द्रित मासिक पत्रिका “जीवन साहित्य” के आप सम्पादक रहे। गाँधी जी पर केन्द्रित एवं अन्य साहित्य के प्रकाशक “सस्ता साहित्य मंडल” के आप सचिव भी रहे।

अहिंसा, मितव्ययता, मधुरवाणी, विनम्रता आपकी पहचान थे, जो कि गाँधी जी व जैनदर्शन के भी परिचायक हैं।

Young Achiever



Namit Kataria, Pune

Young Jaina Awardee 2006, 2008

Lost his right hand in an accident in 6th std. Despite this he has numerous achievements such as 91.06% in SSC exam, 89% in HSC exam, stood first in physically challenged category. Under 500 rank in AIEEE-897AIR in IIT JEE and numerous awards for extra curricular activities.

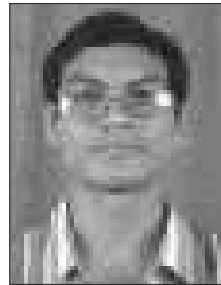
Currently pursuing B-Tech in Computer Science at IIT Bombay.

Nikhil Jain

Meerut

YJA 2002, 2003

CA- Bharat Petroleum Corporation Limited, Mumbai



Aviral Jain

Nagpur

YJA awardee in 2002, 2004.

• 10th std: 95.4% • 12th std: 94.8%

Currently employed in Reliance Industries Limited, Jamnagar.

Got selected in IIM A for 2009-2011 PGP course. (CAT score: 99.28%ile)

Chirping Sparrow

Year - 5, Issue - II



Chirping Sparrow is published quarterly by the

Maitree Jankalyan Samiti

1/205, Professor Colony, Agra - 282 002

E-mail : maitreesamoooh@hotmail.com

Website : www.maitreesamoooh.com Mobile: 94254-24984

It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of Maitree Jankalyan Samiti.

TRUTH ABOUT TRADITION

निगोदिया जीव एवं आधुनिक विज्ञान

जैन धर्म अध्यात्म-परक धर्म है जहाँ आत्मा की शुचिता को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। इस शुचिता को प्राप्त करने के लिए जैन धर्मगुरुओं ने मनुष्य को संसार की वास्तविकता का बोध कराने का हर संभव प्रयत्न किया है। प्रकृति का शायद ही कोई ऐसा तत्त्व हो जो जैन मनीषियों के ज्ञान से अछूता रहा हो। जगत में स्थित जड़ और चेतन का अत्यन्त तर्कसंगत, व्यवहारिक और व्यवस्थित वर्णन जैन धर्म में मिलता है। मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति आदि जीवों से लेकर अत्यन्त सूक्ष्म निगोदिया जीवों तक का वर्णन जैन आचार्यों ने किया है।

आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से अभी तक ज्ञात सूक्ष्मतम जीव जीवाणु (बैक्टीरिया) एवं विषाणु (वायरस) हैं। निगोदिया जीवों की तरह यह भी जल, थल और नभ में प्रत्येक स्थान पर मौजूद रहते हैं। माइक्रोप्लाज्मा भी अत्यन्त सूक्ष्म जीव हैं। उक्त सूक्ष्म जीवों की तुलना जैन धर्म में वर्णित निगोदिया जीवों से करने के विषय में गहन शोध और अध्ययन की आवश्यकता है।

जैन धर्म में निगोदिया जीव-

निगोदिया जीव एकेन्द्रिय जीव हैं। इन्हें वनस्पतिकायिक के अन्तर्गत रखा गया है: हालांकि इनका पृथक अस्तित्व भी है।

जो अनन्तों जीवों को एक निवास दे, उसे निगोद कहते हैं। इस निगोद शरीर में बसने वाले अनन्त जीवों को निगोदिया जीव कहते हैं, निगोदिया जीवों को जानने के लिए वनस्पतिकायिक जीवों का वर्गीकरण भी जानना आवश्यक है। यह दो प्रकार का है -

प्रत्येक वनस्पति - जिनमें प्रत्येक जीव का अलग-अलग शरीर होता है।

साधारण वनस्पति - जिनमें अनन्त जीवराशि का एक ही शरीर होता है। उस शरीर में उन अनन्त जीवों का जन्म, मरण, श्वास-निःश्वास क्रिया आदि सभी कार्य एक साथ समान रूप से होता हैं। कच्ची या अपरिपक्व अवस्था में सभी वनस्पतियां साधारण ही रहती हैं। किसी पेड़ की जड़ साधारण होती है, किसी के पत्ते साधारण होते हैं, किसी के फूल साधारण होते हैं, किसी के पर्व (गांठ) का दूध अथवा किसी के फल साधारण होते हैं। इनमें किसी किसी के तो सम्पूर्ण अवयव साधारण ही होते हैं। मूली, अदरक, आलू अरबी आदि सब मूल (जड़ें) साधारण हैं अनन्त जीवों का निवास होने से यह साधारण वनस्पति अनन्तकायिक भी कहलाती है। जिस प्रत्येक वनस्पति के आश्रित निगोदिया जीव होते हैं वह

सप्रतिष्ठित-प्रत्येक कहलाती है। जिसके आश्रित साधारण या निगोदिया जीव नहीं रहते वह **अप्रतिष्ठित-प्रत्येक** कहलाती है।

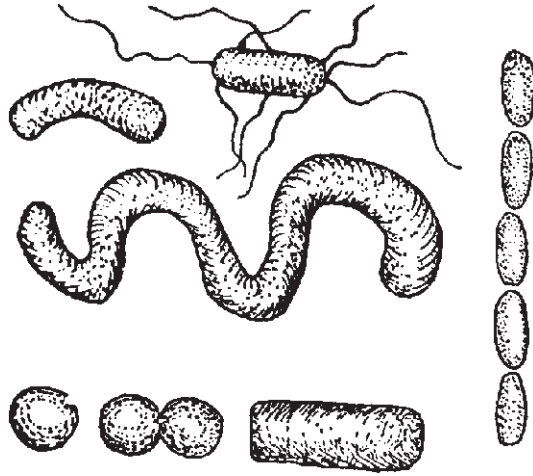
निगोदिया जीव **सूक्ष्म** और **स्थूल (बादर)** दो प्रकार के होते हैं। सूक्ष्म निगोदिया जीव वे कहलाते हैं जो किसी के द्वारा बाधित नहीं होते और न ही किसी को बाधा पहुंचाते हैं अर्थात् किसी के आश्रित नहीं रहते। इसलिए ये सर्वत्र पाये जाते हैं। इन्हें इन्द्रियों द्वारा देखा नहीं जा सकता। बादर (स्थूल) निगोदिया जीव बाधित होते हैं और बाधा भी पहुंचाते हैं पर बादर (स्थूल) होने के बावजूद भी वास्तव में ये भी इतने सूक्ष्म होते हैं कि सामान्य आंखों से दिखाई नहीं पड़ते। इन साधारण कहे जाने वाले निगोदिया जीवों की अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवें भाग या उससे भी सूक्ष्म होती है। निगोदिया जीवों के साथ मुश्किल यह है कि एक ही निगोद शरीर में जीवों के आवागमन का प्रवाह निरंतर चलता रहता है। अतः यह पता लगाना आसान नहीं

होता है कि कब पुराने जीव मर गये और कब अनन्त नये जीवों की उत्पत्ति हो गयी। निगोदिया जीवों का आकार आयत-चतुस्र और गोल दोनों प्रकार का माना गया है।

जैन धर्म के अनुसार जीवों का जन्म तीन प्रकार से होता है - सम्मूर्धन-जन्म, गर्भ-जन्म और उपपाद जन्म। इधर-उधर के परमाणुओं के मिलने से तथा विभिन्न प्रकार के वातवरण से जीता अपने योग्य शरीर बना लेता है, तो इसे सम्मूर्धन जन्म कहते हैं। निगोदिया जीवों का सम्मूर्धन जन्म ही होता है।

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु इन चार स्थावर जीवों के शरीर तथा देव शरीर, नारकी शरीर, आहारक शरीर और केवली का शरीर, इन आठ शरीरों में निगोदिया जीव नहीं होते हैं। शेष सब शरीरों में बादर-निगोद जीव होते हैं। मांस आदि में उत्पन्न होने वाले निगोदिया जीव उसी मांस की जाति के होते हैं अर्थात् उस मांस का जैसा वर्ण, रस, गन्ध है उसी तरह के उसमें बादर-निगोद-जीव पैदा होते हैं। वनस्पतिकाय में जो बादर-निगोद-जीव पैदा होते हैं वे उस वनस्पति के रूप-रस-गन्ध जैसे ही पैदा होते हैं।

जैन धर्म के अनुसार यदि जीव अपनी शारीरिक संरचना पूर्ण करने में सक्षम होता है तो उसे **पर्याप्तक** कहते हैं और जब वह अपनी शारीरिक संरचना पूर्ण करने की क्षमता से रहित होता है और शारीरिक संरचना पूर्ण होने से पूर्व ही मर जाता है तब उसे **लब्ध्यपर्याप्तक** कहते हैं। निगोदिया जीव दोनों प्रकार के होते हैं पर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक।



आधुनिक विज्ञान में सूक्ष्म जीव

आधुनिक जीवविज्ञान में सूक्ष्म जीवों का अत्यन्त महत्व है। प्रकृति के विभिन्न प्रकार के वातावरण में पाये जाने वाले, विविध रोग फैलाने वाले, लाभप्रद या हानिकारक सूक्ष्म जीवों की शारीरिक संरचना एवं क्रियाविधि का विस्तृत अध्ययन होने से ही मानव ने अनेक क्षेत्रों में प्रगति की है। यह सूक्ष्म जीव मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं - जीवाणु, (बैक्टीरिया), विषाणु (वायरस) और एवं माइक्रोप्लाज्मा।

जीवाणु (बैक्टीरिया) - जीवाणु या बैक्टीरिया एककोशीय सूक्ष्म जीव होते हैं। सामान्यतः ये गोलाकार, दण्डाकार या स्पायरल होते हैं। बैक्टीरिया सामान्यतः कालोनी बना कर (गुत्थे के गुत्थे) रहते हैं, जिसमें ये एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। जीवाणुओं का आकार 0.1 माइक्रोन से 10 माइक्रोन तक होता है। एक माइक्रोन एक मिलीमीटर के हजारवें हिस्से के बराबर होता है। अधिकांश जीवाणु परपोषी होते हैं अर्थात् अपना भोजन अन्य कार्बनिक पदार्थ या जीवित जीवों से प्राप्त करते हैं। स्वयंपोषी जीवाणु अपना भोजन जल कार्बनडाइऑक्साइड आदि से स्वयं बना लेते हैं। जीवाणुओं में श्वसन क्रिया होती है और प्रजनन-वर्धी प्रजनन, अलैंगिक या लैंगिक प्रजनन के रूप में होता है।

विषाणु (वायरस)- विषाणु या वायरस का आकार बैक्टीरिया से भी छोटा होता है। इनके स्वयं के कोई कोशिका नहीं होती है बल्कि ये किसी अन्य कोशिका में घुसकर प्रजनन करते हैं। प्रायः वायरस स्वतंत्र दशा में अक्रिय रहते हैं, क्योंकि इनके पास अपना उपापचय तंत्र नहीं होता है। जब वे अपना न्यूक्लिक अम्ल परपोषी कोशिका में अन्तर्क्षेपण करते हैं तो यह क्रियाशील होकर परपोषी कोशिका की उपापचयी क्रिया पर नियंत्रण कर लेते हैं। वायरस सुई या डंडे के आकार के, आयताकार, गोलाकार, बहुभुजीय या चतुष्कोणीय रवों के समान होते हैं। वायरस का आकार अन्गस्ट्राम इकाई से मापा जाता है। एक अन्गस्ट्राम 1/1000 माइक्रोन के बराबर होता है। किसी भी परपोषी कोशिका में लाखों वायरस लम्बे समय तक बिना प्रत्यक्ष रूप से अपनी उपस्थिति बनाए रह सकते हैं।

माइक्रोप्लाज्मा - माइक्रोप्लाज्मा का शरीर अति सूक्ष्म होता है। इनकी कोशिका की लम्बाई जीवाणु कोशिका के दसवें भाग के बराबर तथा व्यास 0.5 माइक्रोन से भी कम होता है। ये जीव अभी तक हुई जीव विज्ञान की खोज में सबसे छोटे आकार के हैं जो अनुकूल वातावरण में स्वतंत्र रूप से जीवित रह सकते हैं।

निगोदिया जीव और जीवाणु, (बैक्टीरिया), विषाणु (वायरस) एवं जैन धर्म और आधुनिक वैज्ञानिक खोजों में माइक्रोप्लाज्मा में समानताएं -

1. बैक्टीरिया और वायरस आदि सूक्ष्म जीवों की तरह निगोदिया जीव भी वातावरण में सर्वत्र पाये जाते हैं।
2. आधुनिक सूक्ष्म जीवों की तरह निगोदिया जीव भी अनन्त होते हैं एवं एक ही पोषक कोशिका या सम्पूर्ण शरीर में रहते हैं। वायरस प्रायः निष्क्रिय ही रहते हैं, परन्तु किसी बैक्टीरिया के शरीर में

पहुंच कर वह सक्रिय हो जाते हैं और उसी शरीर में निवास करते हैं।

3. जिस तरह सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति के आश्रित अनन्त साधारण या निगोदिया जीव पाये जाते हैं उसी तरह हजारों आधुनिक वनस्पतियां हैं जिनकी जड़ तना, कंद या फल-फूलों में बैक्टीरिया या वायरस का निवास होता है। कई अति सूक्ष्म वनस्पतियां जैसे कि एल्गी (काई) आदि के आश्रित अनन्त बैक्टीरिया पाये जाते हैं जो जैन धर्म में वर्णित साधारण वनस्पति के समान जान पड़ती हैं। वैसे भी आधुनिक वैज्ञानिकों ने जीवाणु या बैक्टीरिया को पौधों के वर्ग में ही रखा है।
4. बैक्टीरिया की अनेक प्रजातियों के समान निगोदिया जीव भी गोलाकार होते हैं। वायरस तो निगोदिया जीवों के समान, आयताकार और गोलाकार दोनो प्रकार के होते हैं।
5. जैन धर्म के अनुसार बोन के अन्तर्मुहूर्त पर्यन्त सभी वनस्पतियां अप्रतिष्ठित होती हैं। बाद में निगोदिया जीवों के निवास बना लेने से सप्रतिष्ठित हो जाती हैं। आधुनिक वनस्पति-विज्ञान में फली, दाल, मटर, आदि के पौधों के बीजों को बोन के उपरान्त जैसे ही पौधा बड़ा होने लगता है इसकी जड़ों में छोटी-छोटी गांठें बन जाती हैं। एवं इन गांठों में बैक्टीरिया अपना निवास बना लेते हैं।
6. आधुनिक बैक्टीरिया और वायरस की तरह निगोदिया जीव भी इतनी तीव्र गति से जन्म लेते हैं एवं वृद्धि करते हैं कि यह देख पाना असंभव हो जाता है कि कौन सा जीव नया है और कौन सा पुराना। जिस प्रकार एक शरीर में निगोदिया जीव एक साथ ही जन्म-मरण, श्वासोच्छ्वास एवं अन्य क्रियाएं करते हैं उसी तरह अधिकांश बैक्टीरिया एवं वायरस की गतिविधियां भी समान रूप से चलती हैं।
7. अधिकांश बैक्टीरिया वर्धी या अलैंगिक प्रजनन करते हैं। यही गुण निगोदिया जीव में भी पाया जाता है सभी निगोदिया सम्मूर्च्छन-जन्म वाले हैं।
8. आधुनिक सूक्ष्म जीवों और निगोदिया जीवों में अन्य बड़े जीवों की तरह तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) नहीं होता, यह गुण उनके समान रूप से एकेन्द्रिय होने का संकेत देता है।

निगोदिया जीवों में जो लक्ष्यपर्याप्तक होते हैं उनके जन्म-मरण का काल अत्यंत अल्प है परन्तु बैक्टीरिया या वायरस आदि के बारे में विज्ञान में ऐसा कोई उल्लेख नहीं मिलता। क्या वास्तव में बैक्टीरिया या वायरस आदि जीव भी निगोदिया जीव हैं? इस विषय पर गहन विचार और शोध की आवश्यकता है। इतना अवश्य है कि जैन-आचार्यों द्वारा वर्णित सूक्ष्मतम-जीव, निगोदिया हैं एवं आधुनिक जैव-वैज्ञानिकों द्वारा खोजे गये सूक्ष्मतम-जीव बैक्टीरिया, वायरस एवं माइक्रोप्लाज्मा हैं।

- डॉ. अशोक कुमार जैन, ग्वालियर

M-09425114344

e-mail : ashokjain2003@yahoo.co.in

आपके प्रश्न

Q जब हमारा उद्देश्य डगमगाने लगे और शंका उत्पन्न हो जाये कि सर्विस लगेगी या नहीं ? इतना खर्च करने के बाद भी सर्विस नहीं लगी तो ऐसी परिस्थिति में हमें क्या करना चाहिए ? मेरी हमेशा नेगेटिव सोच रहती है, हर चीज में नेगेटिव हो जाती है । कारण बताये?

A प्रशासनिक सेवा में तकरीबन 600 पदों के लिए परीक्षाएं होती हैं जिनके लिए 3 लाख आवेदन आते हैं। अन्तिम रूप से परीक्षा के बाद चयन होने वाले 600 परीक्षार्थियों को छोड़कर बाकी सभी असफल होते हैं। इस कठोर सच को हर परीक्षार्थी जानता है। इस तरह की किसी भी परीक्षा के लिए हर परीक्षार्थी को कठोर परिश्रम करना पड़ता है। लेकिन इससे निराश होने का कोई कारण नहीं है। मैं चाहे जितनी मेहनत कर लूँ, पर मुझे सफलता नहीं मिलेगी, मैं कभी सफल नहीं हो पाऊँगी इस तरह के नेगेटिव सोच हमारे क्रियाकलापों को बाधित और आशाओं को कुंठित करते हैं। दुनिया में सफलता की सीढ़ियां चढ़ने वाले कामयाब व्यक्ति जीवन में कई बार असफल हुए हैं लेकिन निराश होने की बजाय वे सतत प्रयत्न में लगे रहे हैं और एक दिन सफल होकर कामयाब इन्सान कहलाये। नकारात्मक प्रवृत्ति निराशा की जननी है, वह अपने जाल में व्यक्ति को उलझाकर उसकी रचनात्मक शक्ति को कमजोर बनाती है, ऐसे व्यक्ति की सकारात्मक सोच धीरे-धीरे पंगु हो जाती है। सकारात्मक सोच बनाए रखने के लिए निम्न उपाय अपनायें तो निश्चित ही सफलता मिलेगी:-

9. बेमतलब की बातों से बचें-

अपने आप को बेमतलब की बातों से बचायें, आप उन लोगों से दूर रहें जो आदमी सफलता से पहले तरह-तरह के संदेहों व बाधाओं को गिनना शुरूकर देते हैं। आप को कोई भी कार्य करना है, तो उसकी सफलता या असफलता भी आपके हाथों में है। असफलता के हल्के अहसास से आप अपना मूड खराब न करें। खुली हवा में घूमकर आने के बाद नये उत्साह से फिर से काम में लग जायें। जरा-जरा सी बात पर गुस्सा करके आप किसी का कुछ नहीं, अपना ही नुकसान करते हैं। आप की स्वयं की ऊर्जा इन अनावश्यक बातों से नष्ट होती है।

2. आत्म विश्वास न खोएं - कई बार लगातार विपरीत परिस्थितियों का सामना करते करते व्यक्ति अपना आत्मविश्वास खो देता है यदि ऐसी स्थिति आपके सामने आती है तो इस आत्मविश्वास को पुनः जाग्रत करने की जरूरत है। एक छोटा बच्चा चलना सीखने के दौरान

कितनी बार गिरता / उठता है। गिरता है फिर भी वह चलने लगता है। अगर लगातार कोशिश के प्रति वह आत्मविश्वासी न हो तो वह कभी खड़ा होकर चल नहीं सकता। इसलिए असफल होने की आशंकाओं से घबराने की जरूरत नहीं है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी आप मन में यह भावना रखें कि मुझे सफल होना है मैं इस मुसीबत को पार कर लूंगा। मैं यह कार्य जरूर कर लूंगा, इससे मन को सुदृढ़ बनाए।

3. अपने को दूसरों से कमतर मत आंको - आजकल दूसरों से अपनी तुलना करने की आदत का इतना अधिक विस्तार हो गया है कि लोग इससे हटकर कुछ सोच ही नहीं पाते। आपका प्रयोग ऐसा हो कि विपरीत स्थितियां आपके लिए संबल बनें। अगर आप दूसरों की सफलता में अपने को कमतर आंकेगे तो अपने कार्य के प्रवाह को रोक देंगे और सकारात्मक विचार के बजाय नकारात्मक विचार आप पर हावी हो जायेगा।

सदा सफलता के द्वार खोलने के लिए सकारात्मक बदलाव लाईये। हम क्या हैं, हम सफल होंगे कि नहीं, ऐसा सोचने की बजाय इस बात का विश्लेषण करें कि हमारे प्रयत्नों की दिशा कैसी हो ? और हम क्या बन सकेंगे। यह लक्ष्य निर्धारित करें और सम्पूर्ण निष्ठा के साथ चल पड़े। आप जीवन में न केवल सफल ही होंगे बल्कि जीवन के प्रति संतुष्ट भी होंगे। आप सकारात्मक सोच रखें और सर्विस जरूर लगेगी।

आकांक्षा सिंघई, मंडी बामोरा

Q जैन धर्म भाव प्रधान है या कर्म प्रधान। यदि भाव प्रधान है, तो कर्म सिद्धान्त को मानना क्या उचित है ?

A कर्म सिद्धान्त से हमें समझना चाहिए कि राग-द्वेष, अज्ञानता और मोह के द्वारा द्रव्य कर्म आत्मा के साथ बन्ध को प्राप्त होते हैं। हमारी **Feelings** और **Thinking** के आधार पर यह निर्धारित होता है कि हमें किस तरह का कर्म बन्ध होगा। भाव कर्म, द्रव्य कर्म और नोकर्म की वजह से कर्म तीन प्रकार के हैं। हम जो राग द्वेष और मोह करते हैं, वह भाव कर्म है और पुद्गल वर्गणाएं आकर बंध जाती हैं, वह द्रव्य कर्म है और जिस शरीर के माध्यम से कर्म का फल पाते हैं, वह नोकर्म है। जो क्रिया भावों से शून्य होती है वह फलदायी नहीं होती है। इसलिए भावों की प्रधानता है। वह तो ठीक है लेकिन इससे कर्म सिद्धान्त को जोड़ना कर्म सिद्धान्त को ठीक से नहीं समझना है।

अनुभा जैन देवरी MPS 6047

Q. How can Digamber Jain philosophy practically help people to live on a day to day basis in their work place and their family life?

A. In my opinion, it may not be proper to make a distinction between Digamber Jain philosophy and Jain philosophy. Indeed, if you take a discreet view, Digamber Jain philosophy is the basic Jain philosophy. Jain Philosophy lays down simplest guidelines to lead an ideal life. These are Self-confidence or Self-reliance, Self-knowledge (Atma-gyaan) and Self-satisfaction. Every one, wherever and whatever he may be, can make his life an ideal one, because every one is responsible for one's prosperity and downfall. Prosperity or downfall is not dependent on any omnipotent God. The physical comforts or misery of a person is the result of his good or bad actions in life. If he wants he could achieve bliss in his life by conquering his desires, passions and indulgence in mundane pleasures. Self-reliance is a basic attribute of every person. If a person awakens his eternal powers, realizes his duties / responsibilities and leads his life with self-confidence, he is sure to get success in

life. Jain philosophy preaches every one to be tolerant and respectful to the other's point of view under all circumstances. To listen others Views is the tolerance of thoughts. Obstinance of thoughts generates feelings of inequality, argument and conflict in life. One needs to be honest in accepting the truth.

Jain philosophy preaches for accumulation of minimum physical comforts for leading a contented life. The passion of acquiring maximum and un-necessary possessions leads one to mental tension, jealousy, extreme aversion, violence, untruth and all sort of bad habits. This also results in mutual exploitation. Satisfaction in life brings happiness, prosperity and eternal peace. The fundamentals for a contented life are: to be ready to extend help to others to the extent possible; to keep good relations with others without a desire for any reciprocal gain/benefit and to try to keep continuous and complete purity and sanity in all walks of life.

Q ऊनी वस्त्र या बिना सोले के वस्त्र पहने हुए चावल या द्रव्य धोकर चढ़ाना चाहिए या बिना धुले चावल से दर्शन पूजा करनी चाहिए।

A यदि वस्त्र शुद्ध नहीं है तो धुली द्रव्य का उपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि उसमें सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति संभव है। शुद्ध वस्त्र पहनकर ही धुली द्रव्य से पूजा करनी चाहिए। द्रव्य पूजा तो शुद्ध वस्त्र पहनकर अष्ट द्रव्य से ही करनी चाहिए। धुली द्रव्य से ही अष्ट द्रव्य बनाया जा सकता है, अन्यथा नहीं। यदि दर्शन करते आप अपने चावल चढ़ाते हैं तो उन्हें भी धोकर सुखाना और फिर चढ़ाना संभव नहीं है। क्योंकि चावल धोने के बाद बसरे माने जाते हैं इसलिए अपने को विधिपूर्वक ही धर्म क्रियाएँ करनी चाहिए

नेहा जैन, चंदेरी

A वास्तव में सब लोग मुझे देख रहे हैं या मेरे कार्य की तरफ सबकी दृष्टि लगी हुई है, यह एक मनोवैज्ञानिक भ्रान्ति है। इससे बचने के लिए आप सोचें कि मैं सही हूँ, फिर चाहे मुझे कोई भी देखता रहे मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वैसे भी लोगो के पास इतना वक्त नहीं है कि वे हमारी गतिविधियों का ध्यान रखें। यदि हम सही हैं, तो सभी के द्वारा देखने पर हमें गर्व का अनुभव करना चाहिए कि सब लोगो का ध्यान मेरे प्रति है। यह ऐसा है जैसे कोई फोटो खिंचवाता है, तो वह फोटो खिंचवाते समय विभिन्न प्रकार की मुद्राएं बनाता है कि मेरा फोटो अच्छा आ जाए, पर जो नेचुरल फोटो आता है वैसे बनावटी फोटो नहीं आ पाता। हमें हमेशा नेचुरल ही रहना चाहिये।

एकता जैन दमोह

Q स्त्रीलिंग का छेद क्या आर्यिक दीक्षा के बिना नहीं किया जा सकता है? विस्तृत जानकारी दें।

A सम्यग्दृष्टि नरक, तिर्यच, स्त्री, नपुंसक, दुष्कूल, अपंग शरीर, अल्पायु आदि पर्यायों में उत्पन्न नहीं होता। यदि सम्यक् दर्शन के साथ आर्यिका के व्रत कोई ग्रहण कर ले, तो उसे फिर स्त्रीपर्याय नहीं होती, जैसे सीता का जीव आर्यिका के व्रत धारण करके स्वर्ग में प्रतिइन्द्र हुई और उसने अपनी स्त्री पर्याय का छेद कर दिया अर्थात् अब वह स्त्री पर्याय को प्राप्त नहीं होंगी। अत्रती सम्यग्दृष्टि भी स्त्री पर्याय में उत्पन्न नहीं होता है।

एकता जैन दमोह

Q How should we get rid of the habit of tea or coffee? Suggest proper alternatives.

A चाय और कॉफी में केफीन नामक नशीला पदार्थ पाया जाता है और कॉफी कोलेस्ट्रॉल बढ़ाने में सहायक होती है तथा इनमें हानिकारक तत्व पाये जाते हैं जो हमारे शरीर को हानि पहुंचाते हैं। ऐसा विचार करके हम चाय/कॉफी के स्थान पर दूध में सौंठ, कालीमिर्च उबालकर पी सकते हैं। दो चार दिन चाय कॉफी नहीं पीने से सिर में दर्द होने लगता है लेकिन धीरे-धीरे वह ठीक हो जाता है। अगर आप दृढता रखें और संकल्प कर लें तो इस आदत से बचा जा सकता है।

स्नेहा कॉसल ललितपुर XII 270

Q I feel all the time that all persons look at me, when I do any work, I feel lot of hesitation during my work.



यदि आपको कोई शंका या प्रश्न है, तो हमें लिख भेजिये। मुनिश्री द्वारा उसका उत्तर दिया जाकर शंका का समाधान किया जायेगा।

- सम्पादक

पीर पराई जाने रे.....

सबसे पहले मैं ये कहना चाहूंगी कि मुनिश्री की अनुपस्थिति स्पष्ट अनुभव की जा सकती है, कोई भी, कभी भी उनकी जगह नहीं ले सकता है।

हम सभी को यह समझना चाहिए कि हर बच्चा "विशेष" है। हम सभी बच्चों में यही देखते हैं कि वो पढ़ाई में कितने अंक ला रहा है। और काफी बच्चे अच्छे अंक लाते भी हैं, लेकिन हमारा ध्यान उन बच्चों पर भी होना चाहिए, जो अच्छे अंक नहीं ला पाते हैं, और जिन्हें फेल होने का, हारने का डर होता है।

हमारे सब तरफ एक Communication Gap फैला हुआ है, ये Communication Gap शिक्षक और विद्यार्थी के बीच में है, माता-पिता और उनके बच्चों के बीच में है, और यही बच्चों में मानसिक तनाव और अवसाद की वजह है। इसका नतीजा हम सभी ने अखबारों में पढ़ा ही है बतौर उदाहरण हाल ही में स्कूल में एक विद्यार्थी ने अपने पिता की रिवॉल्वर से अपने ही एक सहपाठी की जान ले ली।

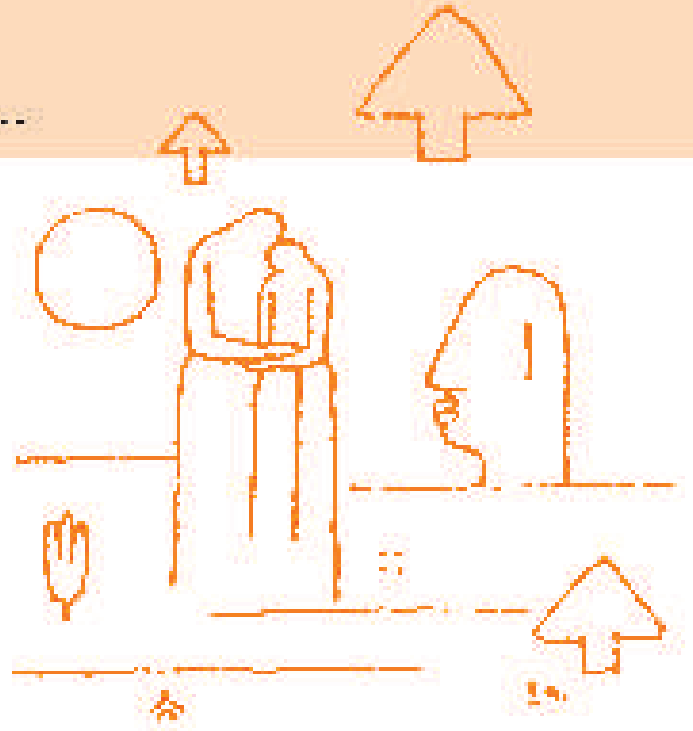
जीवन एक अवसाद नहीं एक उत्सव है।

जीवन एक खुशहाली की तरह जीने का एक अवसर है, साथ ही हमें हमारे दायित्व नहीं भूलने चाहिए।

हमें अपने आस-पास की हिंसा, बच्चों में मानसिक तनाव और अवसाद पर सबसे ज्यादा ध्यान देना होगा। मुझे याद आता है जब शिक्षा की नीति निर्धारण में नए कदम उठाए गए तो उनमें Social responsibility of every child पर सबसे ज्यादा ध्यान दिया गया। इसलिए कई नीति जैसे Each one, teach one या फिर कोई समाज सेवा का कार्य या फिर NSS जैसे संस्थान के माध्यम से बच्चों को सामाजिक एवं नैतिक जिम्मेदारियां सिखाई जाती हैं।

ऐसा नहीं है कि हिंसा को मिटाने के लिए कदम नहीं उठाए जा रहे हैं, और ऐसा भी नहीं है हम सभी लोग हमारे आसपास होने वाली हिंसक घटनाओं से चिन्तित नहीं हैं। हिंसा भले ही धर्म के नाम पर हो, जाति के नाम पर हो, क्षेत्र के नाम पर हो या फिर देश के नाम पर हो। ये निर्णय हमें करना ही है कि हम हमारी सुरक्षा के लिए क्या कदम उठाएं। पहला – हम सब तरफ सेनाओं की घेराबंदी कर दें या फिर दूसरा – हम सभी एक गहन चिन्तन करें कि हमारे आस-पास घटने वाली हिंसा का क्या कारण है? और इसके लिए वो सभी धर्म जो अहिंसा को सबसे सर्वोपरि मानते हैं उनकी जिम्मेदारी हिंसा का मूल कारण जानने के लिए और भी बढ़ जाती है।

किसी भी लड़ाई का निवारण अहिंसा के माध्यम से ही किया जा सकता है। हमें ये विचार करना है कि अहिंसा के माध्यम से बच्चों की छोटी-छोटी लड़ाई या गृह क्लेश जैसी



समस्याएं कोसे रोके जा सकने हैं। हमें हमारे आस-पास एक अहिंसक समाज का निर्माण करना चाहिए। हमें गांधि जी संस्कृति का विकास करना चाहिए। हमने आज तक कभी भी इस ओर ध्यान नहीं दिया है। हमने कभी ये नहीं सोचा कि कैसे हम हमारी संस्कृति, हमारे गुणों, हमारी शिक्षा के द्वारा चारों ओर एक अहिंसक वातावरण का निर्माण कर सकते हैं। मैं आप सबसे विनती करती हूँ कि हम सभी आगे बढ़कर ऐसे समाज के निर्माण में योगदान दें, क्योंकि समाज हम सभी से बनती है और इसलिए ये हमारी जिम्मेदारी है कि हम सब इसका निर्माण सही दिशा में करें। "बचपन में माँ कहा करती थीं कि लापरवाही से दौड़ोगे तो तुम्हें भी लगेगी और चींटी भी मरेगी, चींटी मरेगी तो पाप भी लगेगा।" कैसे एक छोटे से उदाहरण से हमने यह सीखा कि छोटे से छोटे जीव की भी रक्षा करनी चाहिए। ये एक बहुत बड़ी बात है कि ऐसे अच्छे विचार, ऐसे गुण हम बचपन से सीखते आ रहे हैं।

एक बार गांधीजी के आश्रम में एक व्यक्ति ने उनसे पूछा, "गांधीजी आप कुर्ता क्यों नहीं पहनते? मैं आपके लिए कुर्ता सिलवाकर ला दूंगा।" इस पर गांधीजी ने कहा, "कितने कुर्ते लाओगे? " उस व्यक्ति ने जवाब दिया, "जितने भी आप बोलें एक.....दो.....तीन" गांधीजी ने नम्रतापूर्वक बोला, "मुझे 30 करोड़ कुर्ते चाहिए, क्योंकि हमारे देश में आधे लोगों के पास पहनने के लिए कपड़े नहीं हैं।"

यहां जो बात गांधीजी ने कही वो उनकी सहानुभूति को जाहिर करती है, और हमें इससे यह शिक्षा लेनी चाहिए की हम सभी को एक दूसरे के दुख, एक दूसरे की पीड़ा को समझना चाहिए। ऐसी भावनाएं उचित शिक्षा के माध्यम से उत्पन्न की जा सकती हैं। अगर हमें एक पूरी अहिंसक समाज का निर्माण करना

है, तो हमें एक दूसरे के दुख दर्द को समझना अत्यंत आवश्यक है।

शिक्षा के चार स्तम्भ है —

- Learning to learn is a pillar of education
- Learning to do
- Learn to live together
- Learn to live together in the same plane

Learn to live together शिक्षा का तीसरा स्तम्भ एक अहिंसक समाज की आधारशिला के लिये महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक साथ रहने की दृष्टि से ही हम एक दूसरे को समझ सकते हैं। शिक्षा का चौथा स्तम्भ अपनाकर हम जाति, क्षेत्र और लड़के-लड़कियों के भेद-भाव को दूर कर सकते हैं **learn to live together in the same plane** ये समझना हमारे लिए बहुत जरूरी है। मैं यहां पर बचपन का एक किस्सा आप सबको बताना चाहती हूँ।

मैं एक बहुत ही साधारण से स्कूल में गई थी, लेकिन मेरे लिए वो स्कूल बहुत ही असाधारण था, क्योंकि पढ़ाई से मैं हमेशा आकर्षित रहती थी। हम सबने दस दिन एक जंगल में टेंट में रहकर व्यतीत किए, लेकिन मैंने कभी भी किसी से ये नहीं पूछा की तुम्हारी जाति क्या है, जबकि मैं एक जैन हूँ। साथ रहने की भावना जाति और धर्म की सभी बाधाओं को पीछे छोड़ देती है।

गांधीजी के एक भजन की कुछ पंक्तियां हैं "वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीर पराई जाने रे" इन पंक्तियों का भावार्थ है कि हमें एक दूसरे के दुख-सुख को समझना चाहिए। गांधीजी ने कहा है कि यदि तुम भगवान का सम्मान करते हो, अपने धर्म का सम्मान करते हो, लेकिन अपने दूसरों लोगों का सम्मान नहीं करते हो तो अपने धर्म का अपने भगवान का भी सम्मान नहीं कर सकते हो। एक अहिंसक समाज के लिए ये बहुत जरूरी है कि हम सब न सिर्फ अपने धर्म का बल्कि सभी लोगों का भी सम्मान करें। ये भावना हमें हमारे शिक्षा तंत्र में थोड़ा बदलाव करने से ही आ सकती है।

हम पर साथ ही हमें ये ध्यान में रखना चाहिए कि हमारा अहम हम पर कभी हावी न हो। यदि हम कहीं पर 5,000/- का दान करते हैं, तो उसे हमें कहीं भी व्यक्त नहीं करना चाहिए और न ही कभी खुद को याद दिलाना चाहिए। ये बहुत जरूरी है। अहंकार चाहे शिक्षा का हो, या पद का, यदि हम अपने अहंकार को कम करते हैं तो अहिंसक समाज के निर्माण में अपना सहयोग करते हैं।

अंत में मैं दुष्यन्त कुमार की ये लाईनें कहना चाहूंगी —

आग मेरे सीने में न सही,

आग तेरे सीने में सही, लेकिन आग जलनी चाहिए,

मेरा मकसद हंगामा खड़ा करना नहीं है,

मेरी कोशिश है सूरत बदलनी चाहिए।

— डॉ. प्रतिभा जैन, जयपुर

(Young Jaina Award 2008 पर दी गई Speech के अंश)

NEWS IN BRIEF

We are updating our address book and mailing lists. If you have not updated your address by filling up the form send with the previous issue of Chirping Sparrow, we request you to kindly fill up that form and sent us back by not later than 15 days of receiving this issue. Otherwise you can drop us a letter showing your willingness to receive the future issues of Chirping Sparrow and update your correspondence address. You can also drop an email about the same.

इस अंक से हम एक नया कॉलम शुरू कर रहे हैं —

Open Forum

एक परिचर्चा — आपके मनचाहे विषय पर

आपके चयनित विषय पर हम सभी के विचार पत्र या ई-मेल से आमंत्रित करेंगे। फिर चयनित विचारों का संकलन कर उस पर मुनिश्री के चिंतन का समावेश कर आलेख के रूप में आगामी अंक में प्रकाशित करेंगे। आप अपने विषय और विचारों को हमें पत्र या ई-मेल द्वारा लिख भेजें।

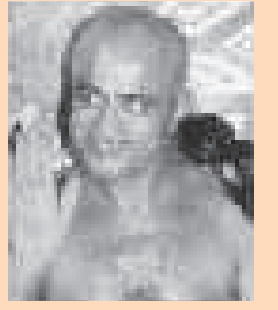
'Young achiever' is a regular and widely followed section of Chirping Sparrow. In this section we showcase the achievements of young Jain students and professionals (preferably of Young Jaina Awardees) We request all our awardees / their family members and our readers to please send us your or your wards' or others' achievements which can possibly make it to young achievers. Please send the entry with passport size photograph along with the brief note on achievements and profile.

IIT, PMT, AIEEE, की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों यदि कोचिंग के नोट्स की आवश्यकता हो तो हमसे सम्पर्क करें। सम्पर्क : 9425137669, 9827440301

To keep better in touch with the awardees and our readers we use the yjaalumni@googlegroup.com as an umbrella mailing list for Young Jaina awardees, Maitree Samooh members and Friends of Maitree Samooh. We request all our readers to join the mailing list. You can join the mailing list by dropping a mail to samooh.maitree@gmail.com or maitreesamooh@hotmail.com.

Young Jaina Award 2009 का फार्म हमारी वेबसाइट www.maitreesamooh.com से 1 मई 2009 के पश्चात् डाउनलोड कर सकते हैं।

संस्मरण



सारा संघ मुक्तागिरि की ओर जा रहा था। सुबह का समय था सभी ने सोचा की समीपस्थ मोर्सी ग्राम तक विहार होगा, सो आसानी से चलकर नौ-दस बजे तक पहुंच जाएंगे। जब दस बजे हम मोर्सी गाँव पहुंचे तो मालूम पड़ा आचार्य महाराज लगभग आधा घंटे पहले यहां से आगे निकल गए हैं।

सचमुच, आचार्य महाराज अतिथि हैं, कब/कहां पहुंचेंगे, कहा नहीं जा सकता। उनका यह अनियत विहार कठिन भले ही है, लेकिन बड़ा स्वाश्रित है। विहार की बात पहले से कह देने में दो मुश्किलें खड़ी हो जाती है। यदि किसी कारण निर्धारित समय पर विहार नहीं कर पाए तो झूठ का दोष लगा और जब तक विहार नहीं किया तब तक विहार का विकल्प बना रहा। इससे अच्छा यही है कि क्षण भर में निर्णय लिया और हवा की तरह निःसंग होकर निकल पड़े। आगे क्या होगा इसकी, जरा भी चिन्ता नहीं है यही तो निर्वन्द साधना है।

हम सभी आचार्य महाराज का अनुकरण करते हुए आगे बढ़ने लगे। गंतव्य दूर था। सामायिक से पहले पहुंचना सम्भव नहीं था, सो रास्ते में ही

एक संतरे के बगीचे में सामायिक के लिए ठहर गए।

सामायिक करके हम लोग लगभग ढाई तीन बजे अपने गंतव्य पर पहुंचे। आचार्य महाराज के चरणों में प्रणाम किया वे हमारी स्थिति से अवगत थे, सो अत्यन्त स्नेह से बोले—“थक गए होंगे, थोड़ा विश्राम कर लो, अभी आहार—चर्या के लिए सभी एक साथ उठेंगे।”

हम समझ गए की आचार्य महाराज स्वयं समय से आ जाने पर भी चर्या के लिए हम सबके लिए रुके रहे, उनके इस असीम वात्सल्य का हम पर गहरा प्रभाव हुआ, जो आज भी है।

मुक्तागिरि 1980

वही है

उसने
एक पेड़ लिखा
खिड़की से बाहर
झोंका, देखा
कोई और
उससे भी पहले
कई—कई पेड़ लिख गया।

उसने सोचा
वह अब पहाड़ लिखेगा
देखा सहसा
कोई और सामने
एक पहाड़ लिख गया।

उसने डरते—डरते, चुपके—से
एक नदी को लिखा
और देखा
एक नदी कोई और लिख गया।

अब वह नहीं लिखता
कहता है
कोई और है
और सिर्फ वही है
जो लिखता है

—मुनि क्षमासागर

Someone else

He wrote tree—
and then he looked out the
window
someone else had written
many many trees before
him.

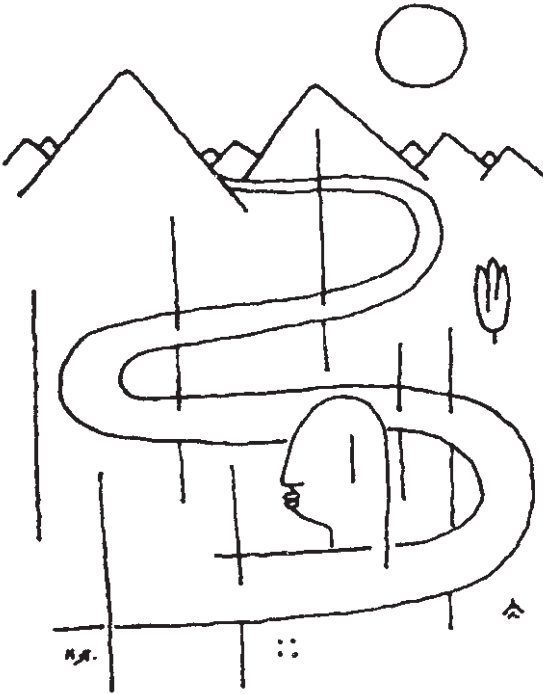
So he decided he would
write, hill—
he looked around and
noticed
that someone else had
written, hill

Then stealthily he wrote,
river—
he noticed that someone
else
had written river too.

he does not write anymore
now he says that there is
someone else
and that someone else
alone, writes.

- Translated by Sunita Jain

मुक्ति से साभार



Cracked pot

A water bearer in India had two large pots, each hung on each end of a pole which he carried across his neck. One of the pots had a crack in it, and while the other pot was perfect and always delivered a full portion of water at the end of the long walk from the stream to the master's house, the cracked pot arrived only half full.

For a full 2 years this went on daily, with the bearer delivering only one and a half pots full of water in his master's house. Of course, the perfect pot was proud of its accomplishments, perfect to the end for which it was made. But the poor cracked pot was ashamed of its own imperfection, and miserable that it was able to accomplish only half of what it had been made to do.

After 2 years of what it perceived to be a bitter failure, it spoke to the water bearer one day by the stream. "I am ashamed of myself, and I want to apologize to you."

"Why?" asked the bearer. "What are you ashamed of?"

"I have been able, for these past two years, to deliver only half my load because this crack in my side causes water to leak out all the way back to your master's house. Because of my flaws, you have to do all of this work, and you don't get full value from your efforts," the pot said.

The water bearer felt sorry for the old cracked pot, and in his compassion he said, "As we return to the master's house, I want you to notice the beautiful flowers along the path."

Indeed as they went up the hill, the old cracked pot took notice of the sun warming the beautiful wild flowers on the side of the path and

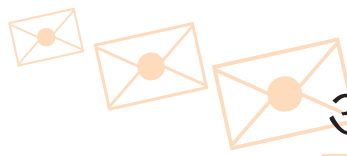
this cheered some. But at the end of the trail, it still felt bad because it had leaked out half its load, and so again it apologized to the bearer for its failure.

The bearer said to the pot, "Did you notice that there were flowers only on YOUR side of your path, but not on the other pot's side? That's because I have always known about your flaw, and I took advantage of it. I planted flower seeds on your side of the path, and every day while we walk back from the stream, you've watered them. For 2 years I have been able to pick these beautiful flowers to decorate my master's table. Without you being just the way you are, he would not have this beauty to grace his house."



Moral: Each of us has our own unique flaws. We're all cracked pots. Some of us don't grow old gracefully, some are not so smart, some are tall, large & big, some bald, some physically challenged, but it's the cracks and flaws we each have that make our lives together so very interesting and rewarding. You've just got to take each person for what they are, and look for the good in them. There is a lot of good out there. There is a lot of good in you, My Friend! Blessed are the flexible for they shall not be bent out of shape.

Remember to appreciate all the different people in your life!



आपके पत्र

I am thankful to Maitree Samooh for the newsletter Chirping Sparrow. I eagerly wait for it. I like the column "Mahatvapurna chitthi" very much. The story always teaches a long lasting lesson and moral.

Arpita Jain, Bhopal

मुझे आपके द्वारा भेजी गई **Chirping Sparrow** पत्रिका प्राप्त हुई। इसे पढ़ कर के मन को बहुत शांति मिलती है, क्योंकि मेरी जितनी भी जिज्ञासाएं रहती हैं वे सभी इस **Chirping Sparrow** पत्रिका को पढ़ने से दूर हो जाती हैं। मेरा आप सभी से यही अनुरोध है कि आप इसी तरह से यह पत्रिका भेजते रहें जिससे कि हमें भी कुछ धर्म लाभ प्राप्त हो।

शिल्पी जैन, मेरठ

I like the Chirping Sparrow and specially its charming, suitable and simplified content for us youth. Actually I was disappointed after the cancellation of YJA ceremony 2007-2008. But even today Chirping Sparrow reminds me of beautiful YJA.

Chirping Sparrow helps us to realize our great principles. We need time to time motivation and Chirping Sparrow does that. Article about the five things by Dr. APJ Kalam gave me my confidence back. I think that there should be some camp or project for us to develop our personality.

Nidhi Shirish Chawra, Karanja

मुझे पत्रिका मिली। मुनिश्री द्वारा दिये गये प्रश्नों के सटीक उत्तर हम युवाओं के लिये अत्यंत प्रेरक, रोचक और ज्ञानवर्धक हैं। **Chirping Sparrow** में अपने सभी दोस्तों को पढ़ाती हूँ मुझे नियमित यह पत्रिका भेजें। आपके द्वारा समय-समय पर **competetive Exams** के लिये तैयारी हेतु सहयोग देना सराहनीय है।

अनुभा जैन, देवरी

Open Forum

I read this on the wall of a certain ashram, 'Expensive marriages lead to corruption and greed in the society.' I don't know who said or wrote this but the statement stuck in my mind. Aren't many of rituals in our marriages are meant just to show our status in the Samaj? The menu of the reception, the places where guests are made to stay, the lawns, the gifts, the outfits, the visits to parlors (even men do this extensively these days) and dowry (still widely prevalent) generally all these involve a huge spending and display of one's financial capabilities.

Picture becomes more gloomy if we consider those who can't be as extravagant and yet have to involve in demonstration of wealth. Maintaining a social status by extravagant spending in marriages results in increased burden amongst families, ultimately creating ground for greed. Now, just put this into a larger perspective. Isn't this a breeding ground for greed and corruption in society? We invite your views, your take and suggestions to get out of this mess.

Aviral Jain, Nagpur

इस समस्या पर आपके क्या विचार या सुझाव हैं। हमें लिख भेजिये या मेल कीजिये -
maitreesamooh@hotmail.com / samoohmaitree@gmail.com

Your space

हे मुनिवर ये मन पूछता है बार-बार
जाने किस मिट्टी से बने हो तुम
जाने कौन से रंग में रंगे हो तुम
सूरज की तपन तपा न सकी जिसे
जाड़े की ठिठुरन डिगा न सकी जिसे
हे सहनशील, संवेदनशील गुरूवर,
हमें भी इस रंग में रंग दो
अमरता का वर दो !

महिमा जैन
शाहपुर

When I was a child,
I used to climb up the pole,
To see the world,
And the whole.
Today when I am grown-up,
And can see the world
Sitting inside my room,
I have forgotten to climb up.
Now,
Will I ever learn again to climb,
And conquer those heights,
Or will I just sit in my room
And miss those sights!

Saurabh Jain, Ashoknagar

लक्ष्य

होश है, जोश है,
लक्ष्य के प्रति दृढ संकल्पित हैं।
क्या हुआ, यदि समय अल्प है।
क्या हुआ यदि मुश्किल भरी डगर है।
क्या हुआ यदि नाकामी का डर है।
अब तो हर हाल में मंजिल को पाना है
गैर हुआ जमाना अब बस
मंजिल ही ठिकाना है।
अब तो हर हाल में
बस मंजिल पाना है।

अनुभा जैन, देवरी

महत्त्वपूर्ण चिट्ठी

मेरे अच्छे पापा

एक बच्चा अपने पिता से बड़ा प्रेम करता था। पिता भी बच्चे से उतना ही स्नेह रखते थे। बच्चे की माँ नहीं थी, पिता ही उसके लिए माँ और बाप दोनों थे। बच्चा उनके साथ ही खेलता, उनके साथ ही सोता। पिता उसका पूरा ख्याल रखते थे, लेकिन कई बार जाने-अनजाने, चाहे-अनचाहे बच्चे की अनदेखी हो ही जाती थी। हालांकि उसने कभी इस बात को लेकर शिकायत नहीं की थी।

एक बार बच्चे का जन्मदिन आया। वह हर जन्मदिन पर पिता के साथ घूमने-फिरने जाता था। इस बार भी उसे उम्मीद थी कि वे उसे बाहर ले जाएंगे, खिलौने और कपड़े दिलवाएंगे। मगर पिता ने ये सारे उपहार उसे एक दिन पहले ही दे दिए। कारण: अगले दिन उन्हें एक बिजनेस मीटिंग में व्यस्त रहना था। ऐसा वे दोनों नहीं चाहते थे, पर कामकाज की मजबूरी थी। बच्चा छोटा ही था, पर पिता की व्यस्तताओं को समझता था। उसे मालूम था कि पापा को घर के अलावा बाहर के कामों का भी ध्यान रखना पड़ता है।

अगले दिन पिता ने जाते-जाते वादा किया कि वे शाम तक जरूर लौट आएंगे और फिर वे दोनों बाहर चलेंगे। बच्चा दिन भर उनकी राह तकता रहा। शाम हो गई। मगर वे नहीं आए। वे भी क्या करते, मीटिंग जरा लंबी खिंच रही थी।

कुछ देर बाद रात घिर आई। बच्चा उदास था, पर नाराज नहीं था, क्योंकि वह पिता की दिक्कतों को जानता था। रेफ्रिजरेटर में खाना रखा ही था। पिता ने उसे सिखा रखा था कि कभी उन्हें आने में देर हो जाए, तो वह खाना खा ले और सोने चला जाए।

आया ने नन्हें, मगर समझदार बालक को खाना खिलाया और अपने घर चली गई। बच्चा भी सोने चला गया। पिता ने उसमें एक और अच्छी आदत डाली थी सोने से पहले प्रार्थना करना। बालक बिस्तर पर घुटने के बल बैठ गया। उसने आंखे बंद की और अपने हाथ जोड़े। उधर पिता घर के दरवाजे पर पहुँच चुके थे। उन्होंने जूते उतारे और दबे पाँव शयनकक्ष की ओर बढ़ने लगे, ताकि बच्चे की नींद में खलल न हो।

तभी उसकी आवाज सुनकर वे ठिठक गए। वह कह रहा था, हे भगवान, मेरे पापा बहुत अच्छे हैं। मैं चाहता हूँ कि बड़ा होकर मैं

पापा जितना अच्छा आदमी बनूँ। " बच्चा तो प्रार्थना करके सो गया, पर पिता की आंखों से आंसू बहते रहे। खाना खाकर वे कमरे में पहुँचे तब तक बच्चा गहरी नींद में जा चुका था। बिस्तर पर जाने से पहले पिता ने आसमान की ओर सिर उठाकर हाथ जोड़ते हुए कहा, ' हे भगवान, मेरा बेटा मुझे जितना अच्छा मानता है, तू मुझे उतना अच्छा बना देना।

